दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

टेस्ट–4

(प्रश्न पत्र-II)

DTVF / OPT-23 **HL-2304**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक : 250 *Maximum Marks : 250*

नाम (Name): संदीप कुमार मीना

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____________

ई-मेल पता (E-mail address): ____________

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 13/7/23

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

6	3	1	2	8	1	9

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) मित्र बनकर रहना स्त्री-पुरुष बनकर रहने से कहीं सुखकर है। तुम मुझसे प्रेम करते हो, मुझ पर विश्वास करते हो, और मुझे भरोसा है कि आज अवसर आ पड़े, तो तुम मेरी रक्षा प्राणों से करोगे। तुममें मैंने अपना पथ-प्रदर्शक ही नहीं, अपना रक्षक भी पाया है। मैं भी तुमसे प्रेम करती हूँ, तुम पर विश्वास करती हूँ और तुम्हारे लिए कोई ऐसा त्याग नहीं है, जो मैं न कर सकूँ। और परमात्मा से मेरी यही विनय है कि वह जीवनपर्यन्त मुझे इसी मार्ग पर दृढ़ रखें। हमारी पूर्णता के लिए, हमारी आत्मा के विकास के लिए और क्या चाहिए! अपनी छोटी-सी गृहस्थी, अपनी आत्माओं को छोटे-से पिंजड़े में बन्द करके, अपने दुःख-सुख को अपने ही तक रखकर, क्या हम असीम के निकट पहुँच सकते हैं? वह तो हमारे मार्ग में बाधा ही डालेगा। कुछ विरले प्राणी ऐसे भी हैं, जो पैरों में यह बेड़ियाँ डालकर भी विकास के पथ पर चल रहे हैं।

संदर्भ एवं प्रसंग :-

व्याख्येय गद्यांश कथासम्राट प्रेमचन्द के प्रतिनिधि उपन्यास "गोदान" (1936) से है। इन पंक्तियों में मालती द्वारा मेहता को विवाह प्रस्ताव को इन्कार से संबंधित है।

भाव सौंदर्य :-

इन पंक्तियों में प्रेमचंद छायावादी प्रेम के दृष्टिकोण को बताते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रेमचन्द के द्वारा प्रेम का यह दृष्टिकोण उपन्यास के अंत में मालती के व्यक्तित्वांतरण से संबंधित है। इसमें मालती समाज सेवा के वरण को स्वीकार करती है।

यही चिंतन जयशंकर प्रसाद के यहाँ भी देखने को मिलता है जहाँ देवसेना स्कन्दगुप्त से कहती है-

"मेरे इस जन्म के देवता... ।"

प्रासंगिकता :-

1. उपर्युक्त चिंतन वर्तमान समय में शारीरिक प्रेम को नकारता है और अशरीर प्रेम को महत्व देता है।

2. संवाद के अभाव एवं एकतरफा प्रेम को भी नकारता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) इस नयी सभ्यता का आधार धन है। विद्या और सेवा और कुल और जाति सब धन के सामने हेय हैं। कभी-कभी इतिहास में ऐसे अवसर आ जाते हैं, जब धन को आन्दोलन के सामने नीचा देखना पड़ता है, मगर इसे अपवाद समझिये। मैं अपनी ही बात कहती हूँ। कोई गरीब औरत दवाखाने में आ जाती है, तो घण्टों उससे बोलती तक नहीं, पर कोई महिला कार पर आ गयी, तो द्वार तक जाकर उसका स्वागत करती हूँ। और उसकी ऐसी उपासना करती हूँ, मानो साक्षात् देवी है।

संदर्भ :-

प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचंद के "गोदान" (1936) उपन्यास से ~~[illegible]~~ लिया गया है। इसमें मालती मेहता को नई सभ्यता में धन के महत्व को बताती है।

भाव सौंदर्य :-

इन पंक्तियों में मालती धन के महत्व पर बल देते हैं। धन के माध्यम से सभी सुविधाओं को आसानी से अर्जित करने के बारे में बताती है।

जनकवि नागार्जुन भी कहते हैं —

"कागज की आजादी मिलती ले-लो दो-दो आने में।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

प्रेमचंद अपने अनुभव से इस धन आधारित व्यवस्था को 1936 में ही पहचानते हैं। लोकतंत्र को भी धनिकतंत्र बताते हैं।

शिल्प सौंदर्य :

1. भाषा सरल एवं बोधगम्य है।
2. भाषा में बिंबों का प्रयोग हुआ है।

प्रासंगिकता :

1. वर्तमान समय में परिवार में संवाद और एवं विभाजन धन के आधार पर हो रहा है।
2. प्रेमचन्द की यह पंक्तियाँ आज 87 वर्षों बाद अधिक प्रासंगिक है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कवित्व वर्णमय चित्र है, जो स्वर्गीय भावपूर्ण संगीत गाया करता है! अन्धकार का आलोक से, असत् का सत् से, जड़ का चेतन से, और बाह्य जगत् का अन्तर्जगत् से संबंध कौन कराती है? कविता ही न!

संदर्भ एवं प्रसंग :- व्याख्येय गद्यांश ~~मस्त~~

जयशंकर प्रसाद के नाटक स्कंदगुप्त (1928) से ली गई है। स्कंदगुप्त में इन पंक्तियों के माध्यम से कविता के महत्व पर बल दिया गया है।

भाव सौंदर्य : इन पंक्तियों में कविता के माध्यम से आध्यात्मिक सुख के बारे में बताने का प्रयास किया गया है यह चिंतन व्यक्ति को आशा से निराशा, उत्साहित रहने के मनोभावों से अवगत करवाता है।

ऐसा ही चिंतन कविता के संदर्भ में प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास गोदान में भी बताया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

शिल्प सौंदर्य :-

1. भाषा तत्सम शब्दों से युक्त है
2. भाषा में बिंबात्मक क्षमता से युक्त है
3. भाषा में प्रवाह की शैली बहुत ही शानदार बन पड़ी है

प्रासंगिकता :-

1. सोशल मीडिया ने स्वस्थ मनो-रंजन को कम किया है कविता के माध्यम से बेहतर देख सकते हैं।
2. मूल्यों का समावेश करने में कविता महत्वपूर्ण है
3. ~~[illegible]~~ यह चिंतन स्व प्रबंधन के लिए भी महत्वपूर्ण है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) जीवन का कोई अनुभव स्थायी और चिरन्तन नहीं। जीवन की स्थिति समय में है और समय प्रवाह है। प्रवाह में साधु-असाधु, प्रिय-अप्रिय सभी कुछ आता है। प्रवाह का यह क्रम ही सृष्टि और प्रकृति की नित्यता है। जीवन के प्रवाह में एक समय असाधु, अप्रिय अनुभव आया इसलिये उस प्रवाह से विरक्त होकर जीवन की तृषा को तृप्त न करना केवल हठ है।

संदर्भ एवं प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश यशपाल के उपन्यास "दिव्या" (1945) से ~~उद्~~ लिया गया है। इस गद्यांश में मारिश परिवर्तन के महत्व को दिव्या को बताता है।

व्याख्या :-

मारिश के माध्यम से यशपाल जीवन के बुरे अनुभवों को छोड़कर आगे बढ़ने की प्रेरणा देना चाह रहे हैं। यशपाल दिव्या के ~~कह~~ जीवन के पुराने अनुभव को ~~अनु~~ सीख के रूप में लेने की सलाह दे रहे हैं

यही दृष्टिकोण जयशंकर प्रसाद के प्रतिनिधि काव्य रचना कामायनी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में भी देखने को मिलता है —

"पुरातनता का यह निर्मोक
प्रकृति सहन न करती पल एक।"

शिल्प सौंदर्य :-

1. भाषा तत्सम शब्दों से युक्त है।
2. भाषा का प्रवाह बेहतर है।
3. भाषा में काव्य के समान लय है।

प्रासंगिकता :-

1. वर्तमान समय में युवा पीढ़ी पुराने अनुभवों के कारण अवसाद से निराश है। आत्म हत्या के बारे में सोचती है।
2. जीवन का वास्तविक अर्थ समझने के लिए बेहतर संदेश है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) इसे ले तो जा रहा हूँ, पर इतना कहे देता हूँ, आप भी समझा दें उसे- कि रहना हो तो दासी बनकर रहे। न दूध की, न पूत की। हमारे कौन काम की, पर हाँ, औरतिया की सेवा करे, उसका बच्चा खिलावे, झाड़ू, बुहारु करे तो दो रोटी खाय, पड़ी रहे। पर कभी उससे ज़बान लड़ायी तो खैर नहीं। हमारा हाथ बड़ा ज़ालिम है। एक बार कूबड़ निकला, तो अगली बार प्रान ही निकलेगा।

संदर्भ / प्रसंग :-

प्रस्तुत गद्यांश धर्मवीर भारती की कहानी गुलकी बन्नो से ~~ली~~ लिया गया है। इस कहानी में नारी द्वारा सामना की जाने वाली वंचना का सचित्र वर्णन किया गया है।

भाव सौंदर्य :-

इसमें बांझपन की समस्या को बताया है। दूसरे विवाह के बाद प्रथम पत्नी पर शारारिक हिंसा के ~~रूप~~ ~~के~~ विभिन्न रूपों को भी बताया है। नारी द्वारा विवाह के बाद अपने घर में कैसे एक साधन के रूप में उपयोग किया जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नारी के बहुआयामी शोषण पत्नी के रूप में पति द्वारा ~~और~~ को भी दिखाया है।

शिल्प सौंदर्य :-

1. बिंबात्मक है।

2. तद्भव शब्दों से युक्त है।

प्रासंगिकता :- शारीरिक शोषण के बहुआयामी रूप हम प्रतिदिन समाचार पत्रों के माध्यम दहेजप्रताडना, घरेलू हिंसा आदि के रूप में देखते हैं। इन सबका समाधान करने के लिए करके ही समावेशी समाज का निर्माण होगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'अपने उपन्यासों एवं कहानियों में प्रेमचंद की बुनियादी चिन्ताएँ अपने समय की भी हैं और भविष्य की भी हैं।' इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चरित्र को आवश्यकतानुसार महत्व दिया गया है। ~~कालीदास~~ कालिदास द्वितीय अंक में एक भी संवाद न होने के बावजूद पाठक को या दृशक को प्रत्येक क्षण महसूस होता है।

2. मंचन के स्तर पर :- इस नाटक में तीन अंक एवं तीन दृश्य है जिनमें ज्यादा सामान की आवश्यकता नहीं है। मल्लिका के कमरे में थोड़ा बहुत परिवर्तन के साथ मंचन आसान हो जाता है।

3. भाषा के स्तर :- मोहन राकेश के यहाँ भाषा तत्सम शब्दों से युक्त होने के बावजूद पाठक को अर्थग्रहण में बाधा उत्पन्न

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नहीं करती है। प्रसाद के यहाँ भाषा बाधा के रूप में उपस्थित होती है।

4. ~~भाव~~ उद्देश्य के स्तर पर भी नाटक पूर्ण सफल होता है। यह नाटक प्रत्येक मनुष्य को अपने संघर्ष एवं परिस्थितियों से निर्मित बताता है –

"कालिदास एक असफल विलोम है"

5. ~~भाव~~ नायकत्व एवं खलनायकत्व प्रत्येक पात्र में मात्रगत अंतर के साथ है। स्वयं मोहन राकेश लिखते हैं –

"मनुष्य के व्यक्तित्व के निर्माण में एक-चौथाई योगदान योग्यता का होता है, शेष काम परिस्थितियाँ करती है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समग्रतः हम कह सकते हैं कि प्रसाद की परंपरा को ही मोहन राकेश ने आगे बढ़ाया है इस रचना में मोहन राकेश ने हिंदी नाटकों की चरित्र, भाषा, मंचन जैसी समस्या का समाधान करके मौलिकता का बेहतरीन उदाहरण पेश किया है आपने हिन्दी को तीन नाटक दिये लेकिन आपका योगदान आधुनिक नाटक के जनक के रूप में स्वीकार किया जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'प्रेमचंद की कहानियों में मनोविज्ञान का सुंदर प्रयोग हुआ है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कथासम्राट प्रेमचन्द ने हिन्दी की कहानियों को मनोरंजन से यथार्थ की दुनिया में प्रवेश कराते हैं। आपने हिन्दी कहानी कायाकल्प एवं अभूतपूर्व परिवर्तन किये हैं।

मनोविज्ञान का प्रयोग :-

1. स्त्री मनोविज्ञान :- प्रेमचंद की अनुभवी आंखे महिलाओं के मनोविज्ञान को संपूर्णता से बताती है।

उदा :- बड़े घर की बेटी, अलग्योझा जैसी कहानियों में शानदार बताया है।

" रूप एवं ~~...~~ घमण्ड में चोली दामन का संबंध है

→ नया विवाह में बेमेल विवाह की समस्या को उठाया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

~~अल्मोड़ा~~

2. कृषक मनोविज्ञान :- सभ्यता के रहस्य कहानी में दमड़ी के माध्यम से किसान के लिए बैलों के महत्व एवं मरजाद को बताया है

3. वृद्धों के मनोविज्ञान को बताने के लिए बूढ़ी काकी कहानी में वृद्ध समस्या की भयावहता को बताया है।

4. दलित मनोविज्ञान :- सद्गति कहानी में दलित मनोविज्ञान को स्पष्टता के साथ बताया है_

" ब्राह्मण होंगे तो अपने घर में।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

5. मित्रों के मनोविज्ञान को बताने के लिए गुल्ली डंडा कहानी में दो मित्रों के अंतर को बताया है

समग्रतः समाज के शिल्पी प्रेमचन्द की अभ्यस्त आँखे समाज के लिए दर्पण एवं दीपक दोनों का काम किया है इसमें प्रेमचंद ने सभी वर्गों के मनोविज्ञान को कहानियों में बताने का प्रयास किया है। हिंदी की आधुनिक कहानी विधा को सामान्य पाठकों व पाठकों तक प्रेमचन्द ने पहुँचाया है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'भोलाराम का जीव' कहानी स्वातंत्र्योत्तर भारत की कार्यपालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करती है।' - विवेचन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"भोलाराम का जीव" कहानी में रचनाकार स्वातंत्र्योत्तर भारत की भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति को बताने का प्रयास किया है इसमें कैसे भ्रष्टाचार ने व्यक्ति की मौत के बाद भी व्यक्ति को भ्रष्टाचार की गिरफ्त में लिये हुए है।

भोलाराम का जीव मरने के बाद भी फाइलों में ही अटका हुआ है जहाँ उसकी पेंशन अटकी हुई है।

इस कहानी के माध्यम से वर्तमान भारत की समस्या को भी संपूर्णता के साथ बताने का प्रयास किया है जहाँ कोयला घोटाला, बोफोर्स

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

एवं सरकारी प्रणाली पूर्ण रूप से भ्रष्ट है।

समाज की मनोवृत्ति एवं मूल्यों के स्तर पर भी भ्रष्ट आचरण देखने को मिलता है।

समग्रतः हम कह सकते हैं कि —

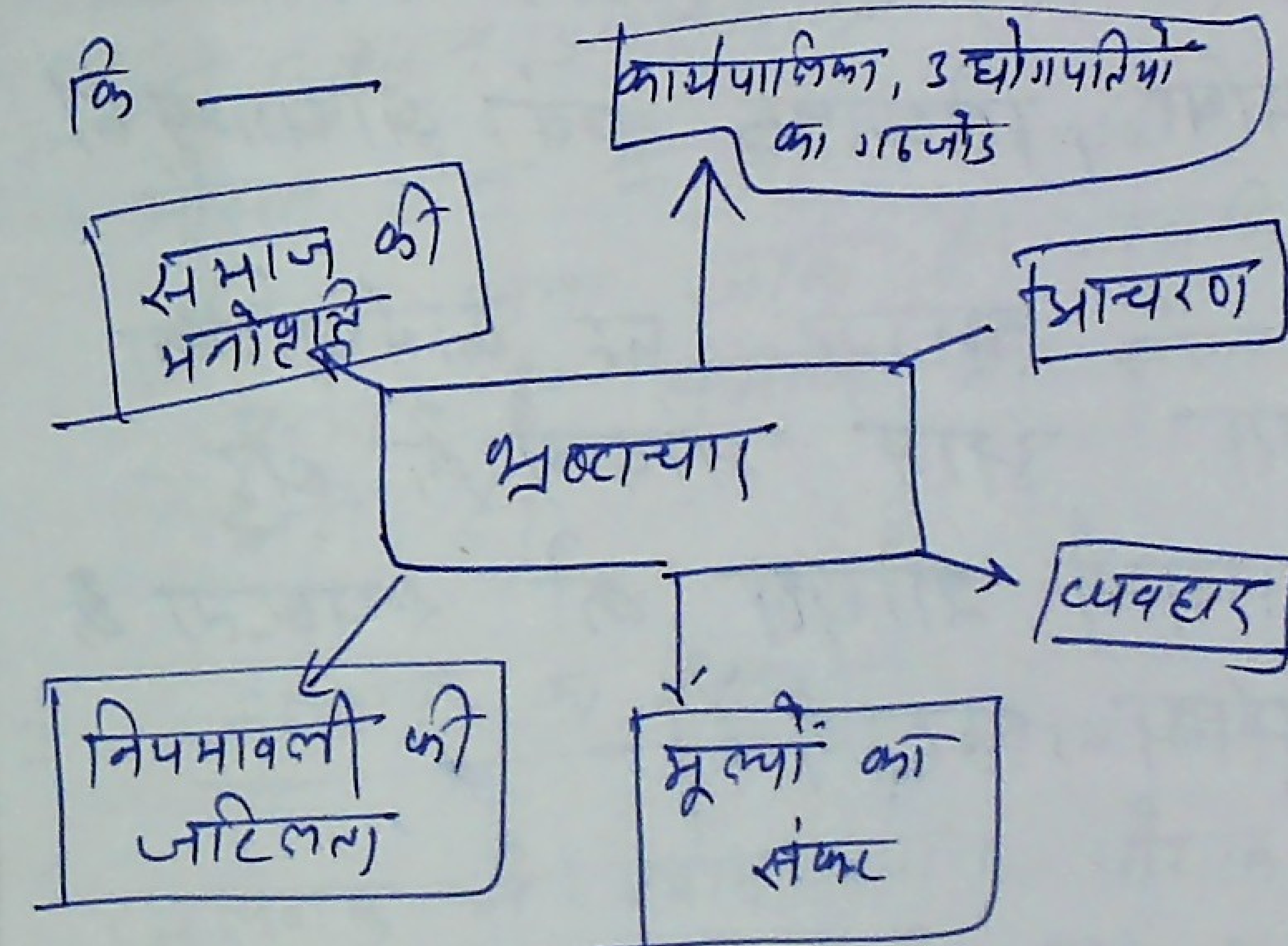

इन्हीं सब समस्याओं हरिशंकर परसाई अपनी कहानी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भोलाराम के जीव में संपूर्णता के साथ उठाने का प्रयास करते हैं।

भोलाराम का जीव कहानी हरिशंकर परसाई के शिल्प के स्तर पर भी बेहतरीन है। इसमें भाषा, बिंबात्मक एवं बोधगम्य है।

समग्रत: यह कार्यपालिका द्वारा आम आदमी के बहु-आयामी शोषण को स्पष्टता के साथ उठाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) गुलाबराय के निबंध भारतीय संस्कृति के प्रतिपाद्य का उद्घाटन कीजिये। 20

गुलाबराय ने अपने निबंध भारतीय संस्कृति में भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को उठाने का प्रयास करते हैं—

1. जल का महत्व :- भारत में जल की आसान उपलब्धता एवं ग्रीष्म मौसम होने के कारण नहाने को अच्छा माना जाता है। जबकि यूरोप के समाज में ऐसा नहीं है।

2. जलवायु का महत्व :- भारत की ग्रीष्म जलवायु ने खान-पान, पोशाक एवं घरों के निर्माण के स्तर पर महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

है। जैसे भारत में ग्रीष्म मौसम के कारण कोट पहनना अच्छा नहीं है। इसके स्थान पर पगडी, धोती आदि को अच्छा माना जाता है।

3. शब्दों के निर्माण :- शब्दों के निर्माण के स्तर पर भी संस्कृति ने उल्लेखनीय प्रभाव डाला है। भारत में गाय को पवित्र एवं माता का स्थान दिया है। इसी गो शब्द से गवाक्ष, गोधूली जैसे शब्दों का निर्माण किया है।

✗. समग्रत: हम कह सकते हैं गुलाबराय ने भारतीय संस्कृति

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के निबंध के माध्यम से संस्कृति जीवन के विभिन्न पक्षों को किस प्रकार प्रभावित किया है इसको देखने में महत्वपूर्ण रूप से योगदान दिया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'भारत-दुर्दशा' नाटक के रचना-उद्देश्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

भारत-दुर्दशा नवजागरण के प्रतिनिधि रचनाकार भारतेन्दु की 1875 की रचना है। इस रचना के माध्यम से ~~भारतेन्दु~~ रचनाकार भारत की दुर्दशा का समग्र विश्लेषण करता है।

भारत दुर्दशा नाटक के रचना-उद्देश्य:

① भारत के भाग्य का निर्णय ~~10~~ 20 करोड़ लोगों के द्वारा किया जायेगा—

"बीस कोटि सुत होत फिरत हैं।"

~~②~~ इस नाटक में सभी लोगों के समग्र प्रयास के महत्व को स्वीकार किया है।

② भारत की दुर्दशा के समग्र कारणों की पहचान करना। इसमें आंतरिक एवं बाह्य कारणों की पहचान

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को गई। आंतरिक कारणों में आलस्य, मदिरा सेवन, फूट, बुद्धिजीवियों की अकर्मण्यता जैसे कारणों की पहचान की।

बाह्य कारणों में धन के बहिर्गमन, अंग्रेजों की नीतियों की पहचान की -

" सब धन विदेश चली जात है, इहै अति ख्वारी।"

(3) बुद्धिजीवियों की अकर्मण्यता को भारतेन्दु 1870 में पहचानते है यही इन्हें प्रेमचन्द के ~~बिजली~~ ओंकारनाथ एवं महाभोज के दत्ताबाबू के समक्ष और भी भयंकर है। मुक्तिबोध कहते हैं —

" बौद्धिक वर्ग है क्रीत दास
किराये के विचारों का उद्भास

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

" सर्वस्व लिये जात अंग्रेज
हम केवल लेक्चर के तेज।"

(4) भारतेन्दु ने अंग्रेजों की शिक्षा पद्धति एवं भारतीयों राजाओं की भी वास्तविक पहचान की है -

" देखो विद्या का सूर्य पश्चिम से उदय होता है"

निष्कर्षत: भारतेन्दु नाटक अपने उद्देश्य नवजागरण, भारत की दुर्दशा की पहचान के दृष्टिकोण से बेहतर है पर रचनाकार के अनुभव की सृजनात्मक समग्र अभिव्यक्ति है जो आज की गरीबी, कुपोषण, भूख की समस्या के लिए 140 करोड़ लोगों को कर्म की प्रेरणा देती है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी उपन्यास की विकासयात्रा में 'महाभोज' उपन्यास के महत्त्व के कारणों का निर्देश कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

"महाभोज" (1979) मन्नू भंडारी की सर्वश्रेष्ठ रचना है। इसके माध्यम से लेखिका कर्तव्यबोध एवं समाज को वापस देने का प्रयास करती है।

महाभोज उपन्यास का महत्व :-

(1) भ्रष्टाचार की समस्या :- महाभोज में भ्रष्ट एवं सत्ता के साथ तालमेल करने वाले लोग आर्थिक लाभ की स्थिति में है। दत्ता बाबू नई परमिट, सिन्हा प्रमोशन जैसी गलत खुशियों एवं आचरण से प्रसन्न है।

(2) महाभोज प्रतीकार्थ में संपूर्ण लोकतांत्रिक व्यवस्था का महाभोज

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

है जहाँ लेखिका कहती है —
"बिसेसर लावारिस तो नहीं है।"

इसमें लेखिका मुक्तिबोध की रचना "अंधेरे में" की उपन्यास के माध्यम से कहती है।

(3) लोकतंत्र की असफलता किस प्रकार राजनेताओं, बाहुबलियों के लिए एक सुविधा का साधन बन जाती है।

"एक पद पेशाबी सरकार ...।"

(4) शिल्प के स्तर :- महाभोज भाषा, नाटकीयता, पात्रों की उपयुक्तता आदि के स्तर पर भी अतुलनीय प्रयास है।

(5) महाभोज हिन्दी उपन्यास पात्रा को लेखिका स्वयं के कर्तव्य

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

बोध से जोड़ती है

समग्रत: हम कह सकते हैं कि महाभोज उपन्यास राजनीति, भ्रष्टाचार, पत्रकार वर्ग की अकर्मण्यता आदि समस्याओं को समग्रता से उठाती है

" दुर्निवार सम्मोहन भरी भाषिक के माध्यम से व्यवस्था परिवर्तन, एवं आशा की किरण संवदेना, बिंदा एवं पाठक को प्रेरित करती है दिनकर भी कहते हैं –

" आशा के प्रदीप जलाये चलो धर्मराज।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) हमारा सृष्टि-संहार-कारक भगवान् तमोगुणजी से जन्म है। चोर, उलूक और लंपटों के हम एकमात्र जीवन हैं। पर्वतों की गुहा, शोकितों के नेत्र, मूर्खों के मस्तिष्क और खलों के चित्त में हमारा निवास है। हृदय के और प्रत्यक्ष, चारों नेत्र हमारे प्रताप से बेकाम हो जाते हैं। हमारे दो स्वरूप हैं, एक आध्यात्मिक और एक आधिभौतिक जो लोक में अज्ञान और अंधेरे के नाम से प्रसिद्ध हैं।

संदर्भ/-प्रसंग : यह गद्यांश नवजागरण के अग्रदूत भारतेन्दु की रचना " भारत दुर्दशा (1875) से ली गई है इन पंक्तियों में अंधकार के माध्यम से स्वयं का परिचय कराया है

भाव सौंदर्य : भारतेन्दु भारत की दुर्दशा के वास्तविक कारणों की पहचान करते हैं। भारतेन्दु स्पष्टता के साथ बाह्य एवं आंतरिक कमियों का मूल्यांकन करते हैं नवजागरण में अंधकार, मदिरा, आलस्य, फूट जैसे आंतरिक

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पहचानने का प्रयास किया है। इनके निवारण को ही देश की आजादी को वास्तविक अर्थों में प्राप्त भी बताया है।

शिल्प सौंदर्य :-

1. भाषा में तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है। उदा. - चित्र
2. भाषा में प्रवाह है।
3. मंत्रात्मक गुणों से युक्त है।
4. बिंबों का सृजन किया है।

प्रासंगिकता :- इन पंक्तियों में अंधकार के माध्यम से खुद के सतत सुधारों के महत्व पर बल दिया है। भारत को अभी-भी गरीबी, भूख एवं अन्य समस्याओं की मुक्ति के लिए सतत प्रयास करने होंगे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) जीवन में एक समय प्रयत्न की असफलता मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन नहीं है। जीवन का हम अन्त नहीं देख पाते, वह निस्सीम है। वैसे ही मनुष्य का प्रयत्न और चेष्टा भी सीमित क्यों हो? असामर्थ्य स्वीकार करने का अर्थ है, जीवन में प्रयत्नहीन हो जाना, जीवन से उपराम हो जाना। (दिव्या)

संदर्भ / प्रसंग :- उपर्युक्त गद्यांश दिव्या (1945) से लिया गया है। इस उपन्यास में यशपाल नारी की वंचना को आजादी की पूर्व संध्या पर स्पष्टता के साथ उठाते हैं।

भाव सौंदर्य :-

दिव्या में यशपाल मारिश के माध्यम से नारी की समस्या को उठाते हैं। इसके साथ ही जीवन के दर्शन में सफलता व असफलता, आशा - निराशा आदि के बारे में भी बात करते हैं।

यशपाल के समान ही प्रसाद के यहाँ भी अपने नाटकों एवं कविता

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में निरन्तरता के महत्व पर बल दिया गया है। जीवन दर्शन संपूर्ण समय में प्रासंगिक नजर आता है—

" पुरातनता का यह निर्मोक
~~प्रकृति न करती सहन पल~~
प्रकृति सहन न करती पल एक।"

शिल्प सौंदर्य :

1. भाषा में काव्यात्मक गुणों ~~क~~ से युक्त है
2. बिंबात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है।

प्रासंगिकता :

परिवर्तन के महत्व को बताया है। यह हमेशा प्रासंगिक रहेगा। जो पुराने अनुभव को सीखने के दृष्टिकोण से लेगा और उनको अपने आने वाले जीवन में ~~अ~~ नये अनुभव के सृजन में काम लेगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

— दिव्या

(ग) तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों को, अपने वंश के भविष्य को एक युवती के मोह में नष्ट कर देना चाहते हो। महापण्डित चाणक्य ने कहा है, "आत्मार्थे सततं रक्षेत् दारैरपि धनैरपि।" पुत्र, स्त्री भोग्य है। मति-भ्रम होने पर मोह में पुरुष स्त्री के लिये बलिदान होने लगता है। वत्स, ऐसी ही परिस्थिति में नीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षी और परलोककामी पुरुष के लिये नारी को पतन का द्वार कहते हैं।

संदर्भ / प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ "दिव्या" (1945) से उद्धृत है। इन पंक्तियों में यशपाल नारी के प्रति पृथुसेन के पिता के माध्यम से समाज के दृष्टिकोण को बता रहे हैं।

भाव सौंदर्य :- नारी के प्रति दृष्टिकोण जिसमें वस्तु के रूप में नारी के महत्व को स्वीकार किया गया है। नारी सिर्फ भोग की वस्तु है।

इस चिंतन में मध्यकालीन मानसिकता साफ नजर आती है। ऐसा ही चिंतन आधुनिक कविता में भी देखने को मिलता है—

" खुले - खुले बदन पर
पान - पराग हो गई है औरत।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

शिल्प सौंदर्य :-

1. भाषा तत्सम शब्दों से युक्त है।
"नीतिज्ञ"
2. भाषा में सूत्रों का प्रयोग हुआ है -
"आत्मनं सततं रक्षेत ...।"
3. भाषा का प्रवाह बेहतर है।

प्रासंगिकता :-

1. वर्तमान समय में मानव की तस्करी एक यथार्थ है।
— वेश्यावृत्ति
2. प्रत्येक समाज में शोषण के रूप बदले हैं।

उपर्युक्त प्रश्नों का समाधान करके ही ~~न~~ समावेशी समाज के सपने को पूरा कर पायेंगे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) संसार से तटस्थ रह कर शांति-सुखपूर्वक लोक-व्यवहार-संबंधी उपदेश देने वालों का उतना अधिक महत्त्व हिन्दू धर्म में नहीं है जितना संसार के भीतर घुस कर उसके व्यवहारों के बीच सात्विक विभूति की ज्योति जगाने वालों का है। हमारे यहाँ उपदेशक ईश्वर के अवतार नहीं माने गए हैं। अपने जीवन द्वारा कर्म-सौंदर्य संघटित करने वाले ही अवतार कहे गए हैं।

संदर्भ / प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ निबंध निलय से ली गई है। इन पंक्तियों में धर्म, अवतार, कर्म आदि के महत्व को बताया है।

भाव सौंदर्य :- कर्म के महत्व को बताकर अवतारवाद पर व्यंग्य किया गया है। भारत में भगवान राम से लेकर महात्मा बुद्ध एवं गांधी तक सबने अपने कर्मों के आधार पर ही ईश्वरत्व का वरण धारण किया है।

राष्ट्रकवि दिनकर भी कर्मों के महत्व पर बल देते

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हुए आजादी की पूर्व संध्या पर कहते हैं —

"ऊपर नभ कुछ शून्य-शून्य है
कुछ भी नहीं गगन में
धर्मराज जो कुछ है
जीवन में मिट्टी में।

शिल्प सौंदर्य :-
1. भाषा तत्सम शब्दों से युक्त है।
2. बिंबात्मक गुणों का सहज प्रवाह है।

प्रासंगिकता :-
वर्तमान समय में जो समय की चुनौतियों का बेहतर समाधान करेगा वही बेहतर मनुष्य होगा। चाहे फिर गांधी, पं. नेहरू, अटल बिहारी वाजपेई या नरेन्द्र मोदी हो।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

— गोदान

(ङ) उसकी आंखें बन्द हो गयीं और जीवन की सारी स्मृतियाँ सजीव हो-होकर हृदय-पट पर आने लगीं, लेकिन बे-क्रम, आगे की पीछे, पीछे की आगे, स्वप्न-चित्रों की भाँति बेमेल, विकृत और असम्बद्ध। वह सुखद बालपन आया, जब वह गुल्लियाँ खेलता था और माँ की गोद में सोता था। फिर देखा, जैसे गोबर आया है और उसके पैरों में गिर रहा है। फिर दृश्य बदला, धनिया दुलहिन बनी हुई, लाल चुंदरी पहने उसको भोजन करा रही थी। फिर एक गाय का चित्र सामने आया, बिल्कुल कामधेनु-सी। उसने उसका दूध दुहा और मंगल को पिला रहा था कि गाय एक देवी बन गयी और...।

संदर्भ / प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियों में कथाकार प्रेमचन्द अपने श्रेष्ठ उपन्यास गोदान (1945) में यथार्थ के दामन को स्पष्टता के साथ स्वीकार करता है

~~संदर्भ एवं प्रसं~~

भाव सौंदर्य :-
यह गद्यांश होरी के मरते वक्त की मानसिक अस्थिरता का स्वप्न है। जिसमें होरी अपने बालपन, युवावस्था के सुखद अनुभव के साथ-साथ गाय की लालसा को भी मन में संजोता है यह हर उस किसान की जिंदगी का यथार्थ ~~स्वप्न~~ है जो मेहनत, मर्याद एवं इज्जत

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के साथ जीना चाहता है।

शिल्प सौंदर्य :-

1. भाषा हिंदुस्तानी है पर तद्भव शब्दों से युक्त है।

2. बिंबों का सजीव प्रयोग हुआ है।

प्रासंगिकता :-

वर्तमान समय में कृषक आजादी के 80 वर्षों बाद भी अपने सपनों को लिए हुए ही मर रहा है। आवश्यकता है कि मेहनत का उचित फल दिलाया जाये। दिनकर भी कहते हैं —

"श्वानों को मिलता दूध-भात
भूखे बच्चे अकुलाते...
जाड़े की रात बिताते हैं।"

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) मैला आँचल की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मैला आँचल (1954) में रेणु "आंचलिक उपन्यास" के मानदंडों का सृजन करते हैं।

रेणु के यहाँ ग्रामीण समाज एवं संपूर्ण भारत की समस्या बहु-आयामों के साथ देखने को मिलती है।

मैला आँचल की भाषा शैली :-

1. भाषा में अंचल की विशेषताओं को स्वीकार किया है। इसमें सभी पात्र अंचल की भाषा को स्वीकार करते हैं।

"डॉक्टर ही रोग फैलाते हैं - सब के सुई भोंक के।"

2. यहाँ पवित्र ग्रंथों के उदाहरण भी आंचलिकता के साथ है। रामायण में कहा है - "हानि लाभ जीवन

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मरण सब बिधि हाथ।"

3. विदेशी शब्दों को भी आंचलिक मिठास के साथ स्वीकार किया है—

Vice Chairman - बायस चेयरमन

4. पशु पक्षियों की भाषा भी विशिष्ट बन पड़ी है।

" भूं भूं

5. लोक गीतों का समावेश बेहतरीन किया है। यहाँ जाट - जाटिन के गीत, भुजिपापा और विद्यापत के गान देखने को मिलते हैं।

" धिन्न धिन्न धिन्ना ...।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

6. मैला आँचल की भाषा विभिन्न क्षमताओं से युक्त है। यही भाषा समाज के शोषण को भी स्पष्टता के साथ बताती है।

" बूढ़ी जवान .... किसी को मत छोड़ो।"

समग्रतः हम कह सकते हैं कि मैला आँचल उपन्यास भाषा के स्तर पर मानदंड तय करता है यह आंचलिक उपन्यासों की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है इसकी सर्वश्रेष्ठता में भाषा का योगदान उल्लेखनीय है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'यही सच है' कहानी की शिल्प-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"यही सच है" कहानी मन्नू भंडारी की प्रतिनिधि कहानी है जिसमें नारी की मन: स्थिति का चित्रण किया जाता है

शिल्प योजना :-

① डायरी शैली :- इस कहानी में डायरी शैली का प्रयोग किया है जिसमें दीपा निशीथ व संजय के प्रेम की तुलना करती है

② ~~प्रवाह~~ चेतना प्रवाह शैली :- इसमें दीपा कानपुर में होकर भी निशीथ की उपस्थिति को महसूस करती है

③ भाषा में प्रतीकों का सुंदर प्रयोग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

हुआ है। रजनीगंधा के फूलों के माध्यम से।

(4) ~~जीवन~~ बिंबात्मक क्षमता से युक्त भाषा है। इसमें दीपा ने निशीथ के साथ बिताये ~~जलकते~~ क्षणों के माध्यम से दृश्य अनुभूतियों को बेहतरीन बना दिया है।

(5) भाषा में काव्यात्मक गुणों का बेहतर प्रयोग हुआ है कहानी के अंत में संजय के साथ मिलन –

"कसती जाती हूँ
कसती जाती हूँ।"

(6) कहानी के शब्दों के चयन ने बोधगम्यता में वृद्धि की

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

है। यह *तत्सम शब्दों के बेहतरीन प्रयोग से हुआ है।

(7) सूत्र शैली का प्रयोग हुआ है। जहाँ नारी की मन की गुत्थियों का बताना है।

अत: यही सच है कहानी लेखिका की सर्वश्रेष्ठ कहानी है जिसमें शिल्प क्षमताओं का बेहतरीन उपयोग हुआ है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'नई कहानी' की विशेषताओं के संदर्भ में राजेंद्र यादव की कहानी 'टूटना' पर विचार कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

"नई कहानी" के संस्थापकों में राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर एवं मोहन राकेश है। आपने कहानी विधा को नये आवरण के साथ पेश किया है।

नई कहानी की विशेषता :-

① व्यक्ति कुंठित मनोविज्ञान को दिखाने का प्रयास किया है। जहाँ किशोर व लीना एक-दूसरे के प्रेम विवाह के बाद भी कैसे नापसंद करते हैं।

② रिश्तों की दरार को समग्रता से दिखाया है। किशोर एवं लीना में पहनने जैसे छोटे विषयों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

पर भी तकरार होती है।

③ बेमेल विवाह :- जहाँ प्रेमचन्द के उम्र के बेमेल विवाह को छोड़कर। सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के अंतर को आधार बनाया है
– लीना उच्च वर्ग से है।

④ मध्यवर्ग की असमंजस की मानसिकता को समग्रता से दिखाया है। किशोर जहाँ हर परिस्थिति में अनिर्णय एवं द्वन्द्व की स्थिति में है। वहीं लीना प्रत्येक परिस्थिति में बेहतर का निर्णय लिया है।

⑤ अहं का सामाजिक संबंधों में महत्व देना। किशोर व लीना के संबंधों के मध्य में अहं के कारण ही दरार आती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

⑥ संवाद का अभाव :- किशोर व लीना के मध्य संवाद का अभाव है यह संवाद ही उनके रिश्ते को टूटने का आधार के रूप में कार्य करता है।

अतः किशोर व लीना टूटना कहानी के पात्र है यही पात्र मोहन राकेश की कहानियों में भी नाम बदलकर उपस्थित होते हैं यह पात्र नई कहानी की सभी विशेषताओं को बताते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) दिव्या उपन्यास में 'दिव्या' के चरित्र पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation